RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in
ISSN: 2584-1270
Volume: 2, Issue: 2, July-December 2024, pp. 95-100

नामकरण संस्कार का मानव जीवन पर प्रभाव

डॉ0 भानुप्रकाश त्रिपाठी[1] एवं मनकामेश्वर कुमार तिवारी[2]

[1]सहायकाचार्य एवं [2]शोधछात्र

सी.एम.पी. डिग्री कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश

प्रत्येक मनुष्य स्वयं के मूल्यों और विचारों को जीवन्त और सुरक्षित रखने के लिए संस्कार को माध्यम बनाता है और संस्कारों के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास रखता है। व्यक्ति को संसार में अनुशासित जीवन निर्वाह हेतु संस्कार से धार्मिक प्रेरणा तथा अनुशासन की प्राप्ति होती है। केवल नियमों पर आधारित कोई भी सामाजिक व्यवस्था तब तक स्थायी नहीं होती जब तक उसे संस्कारित न कर दिया गया हो। किसी भी सामाजिक व्यवस्था अथवा नियम के पार्श्व में धार्मिक संस्कार उसे मान्यता देते हैं। सामाजिक नीति एवं मूल्यों का विकास प्रयत्नपूर्वक किए गए संस्कारों से ही सम्भव है। मानव की सामाजिक व्यवस्था की दृढ़ता के पीछे उनके जीवन का नियमित संस्कार ही है। संस्कारों का सम्बन्ध सम्पूर्ण मानव जीवन से था और आज भी है। किसी भी सांस्कृतिक परम्परा का पूर्ण बोध करने हेतु संस्कारों का ज्ञान आवश्यक है।

मुख्य शब्द: *नामकरण, संस्कार, मानव जीवन, प्रभाव*

प्रस्तावना

संस्कार शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक कृञ् धातु से घञ् प्रत्यय लगकर उत्पन्न हुआ है। वह धार्मिक विधि–विधान अथवा कार्य जो आन्तरिक तथा आत्मिक सौन्दर्य का बाह्य तथा दृश्य प्रतीक माना जाता है उसे हम संस्कार कह सकते हैं। जिसके होने से कोई पदार्थ या व्यक्ति किसी कार्य के लिए योग्य हो जाता है वह संस्कार कहा जाता है।[1] ऐसी क्रियाएं अथवा रीति–रिवाज जो योग्यता का वहन करती है संस्कार कही जाती हैं।[2] संस्कार से हम किसी कार्य के योग्य तो होते ही हैं साथ ही दोष से मुक्ति भी प्राप्त हो जाती है। स्मृतियों में ऐसा उल्लेख है कि संस्कार के द्वारा बीज गर्भ से उत्पन्न दोष समाप्त हो जाता है।[3] संस्कारों के विषय में गृह्यसूत्रों में पर्याप्त वर्णन नहीं है किन्तु धर्मसूत्रों में इनका विशद् विवेचन किया गया है।

संस्कार शब्द के साथ विलक्षण अर्थों का योग हो गया है जो इसके दीर्घ इतिहास क्रम में इसके साथ संयुक्त हो गये हैं। इसका अर्थ शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक परिष्कार के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों से है। संस्कारों के क्रियान्वयन से व्यक्ति में विलक्षण तथा अवर्णनीय गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है।

नामकरण संस्कार

गृह्यसूत्रों में संस्कार की संख्या बारह से लेकर अट्ठारह तक दी गयी है। गौतम धर्मसूत्र में तो संस्कारों की संख्या चालीस बताई गयी है। स्मृतियों में संस्कार शब्द का प्रयोग केवल उन्हीं धार्मिक कृत्यों के अर्थ में किया गया है जिनका अनुष्ठान व्यक्ति के व्यक्तित्त्व की शुद्धि के लिए किया जाता था। मनु के अनुसार गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यन्त तेरह यथार्थ संस्कार हैं।[4] याज्ञवल्क्य स्मृति केवल बारह संस्कारों का विवेचन करती है।[5] अङ्गिरा पच्चीस तथा गौतम स्मृति में चालीस संस्कारों की चर्चा की गयी है।[6] परवर्ती स्मृतियों में सोलह संस्कारों की सूची दी गयी है। वर्तमान में सर्वाधिक लोकप्रिय संख्या सोलह ही है। षोडश संस्कार ही आज मान्य होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती की 'संस्कार विधि' और पण्डित भीमसेन शर्मा की 'षोडश संस्कार विधि' में केवल सोलह संस्कारों का ही समावेश है। सभी के द्वारा उल्लिखित किए गए संस्कारों में 'नामकरण' संस्कार का भी वर्णन प्राप्त होता है। बालक का नाम निर्धारित करने वाला संस्कार नामकरण संस्कार कहा जाता है। वर्तमान समय में संस्कारों की दृष्टि से विधि–विधान से आयोजित किया जाने वाला यह प्रथम महत्वपूर्ण संस्कार बन गया है।

सामाजिक चेतना के विकास के साथ मानव जाति ने नामकरण का विधान प्रारम्भ किया। 'नाम्यते अभिधीयते अर्थोऽनेन इति नाम' अर्थात् जिसके अर्थ का अभिधान हो वही नाम है। संसार में व्यक्ति की पहचान हेतु नाम अत्यन्त आवश्यक तत्त्व है। नाम की आवश्यकता एवं महत्ता को स्वीकार करते हुए सभी स्मृतिकारों ने नामकरण को संस्कार के अन्दर समाविष्ट करके इसे धार्मिकता से संलग्न कर दिया। नामकरण के लिए प्राचीन आचार्यों ने अत्यन्त ही सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक चिन्तन किया। नाम सम्पूर्ण व्यवहार का कारण है, वह कल्याणकारी भाग्योदय का हेतु है। नाम के द्वारा ही व्यक्ति संसार में यश की प्राप्ति करता है। नामकरण की महत्ता के विषय में कहा गया है–

नामाखिलस्य व्यवहारहेतुः शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः।

नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म।।

नामकरण का समय

प्रायः यह देखा जाता था कि शिशु के नाम का चुनाव धार्मिकता को दृष्टि में रखकर किया जाता था परन्तु वर्तमान परिस्थिति इससे एकदम भिन्न है। आज शिशु का नामकरण बड़े ही अतार्किक दृष्टि से कर दिया जाता है। सबसे पहले तो उसके जन्म के कुछ समय बाद ही बिना अर्थ वाला अटपटा सा नाम उसे दे दिया जाता है जिसका प्रभाव धीरे–धीरे उसके व्यक्तित्त्व पर परिलक्षित होने लगता है। नामकरण के लिए शास्त्रीय नियमों का पालन न करते हुए अपने इच्छानुरूप नाम देने से बालक में उसी प्रकार का गुण–दोष दिखाई देने लगता है। लोक में प्रचलित भी है कि 'यथा नाम तथा गुण' अर्थात् जैसा नाम रखा जायेगा वैसा ही गुण बालक के अन्दर विकसित होगा।

हमारे शास्त्रों में नामकरण संस्कार करने के लिए विधिवत समय एवं विधि–विधान का वर्णन किया गया है जिसका हमें अनुकरण अवश्य करना चाहिए। आश्वलायन गृह्यसूत्र[8], शांखायन गृह्यसूत्र[9], काठक गृह्यसूत्र[10] तथा बृहदारण्यकोपनिषद् में ऐसा वर्णन किया गया है कि शिशु के जन्म के दिन ही उसका नामकरण कर देना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि शुभ नाम रख दिए जाने से शिशु परम सौभाग्य के साथ अपना जीवन क्रम आगे बढ़ाता है। पतंजलि ने अपने महाभाष्य में भी इसी मत का प्रतिपादन किया है। आपस्तम्ब, बौधायन, भारद्वाज एवं पारस्कर ने शिशु के नाम रखने के लिए जन्म से दसवें दिन को सर्वाधिक उपयुक्त माना है।[11] याज्ञवल्क्य ने जन्म के 11वें दिन नामकरण करने का उपदेश दिया।[12] वैखानस के अनुसार माता 10वें या 12वें दिन सूतिका गृह छोड़ती है इसी के पश्चात् ही बालक का नामकरण किया जाना चाहिए।[13] मनु के अनुसार 10वें या 12वें दिन किसी शुभ तिथि तथा नक्षत्र में बालक का नामकरण करना चाहिए।[14] गोभिल एवं खादिर का मत है कि 10वें दिन, 100वें दिन या एक वर्ष के पश्चात् किसी भी दिन

शिशु का नामकरण किया जा सकता है।[15] लघु आश्वलायन में 11वें, 12वें या 16वें दिन भी नामकरण किया जा सकता है।[16] भविष्य पुराण में 10वें, 12वें या 18वें दिन को नामकरण के लिए उचित माना है। महाकवि बाणभट्ट ने कादम्बरी में लिखा है कि चन्द्रापीड का नामकरण 10वें दिन किया गया था।[17] अपरार्क का कथन है नामकरण के लिए विभिन्न प्रकार के मतों से बचते हुए सभी लोग अपने–अपने गृह्यसूत्र के अनुसार ही शिशु का नामकरण करें। वर्तमान समय में इस प्रकार के विभिन्न शास्त्रीय नियमों का सर्वथा अभाव दिखाई पड़ता है। आज नामकरण के समय किसी भी प्रकार के वैदिक मन्त्रों का प्रचलन नहीं दिखाई देता है। बिना किसी विधि विधान तथा तिथि के शिशु का नामकरण कर दिया जाता है। शिशु का नाम रखने की परम्परा तो जीवित है लेकिन नामकरण के समय किए जाने वाले विधान का पूर्ण अभाव है। शिशु को दो या तीन नाम देने की परम्परा भी प्राचीन काल से ही चली आ रही है। इन्द्र को दैवाप तथा शौनक (गोत्र) इत्यादि नामों से पुकारा जाता था। वैदिक साहित्य में भी दो नामों को रखने का प्रचलन था जो आज तक अबाध गति से चल रहा है। शिशु के लिए एक राशि का नाम अलग, घर पर सम्बोधित करने के लिए अलग तथा विद्यालयों में अलग नाम के साथ सम्बोधित किया जाता है। प्राचीन काल में कुछ लोग अपने नाम के साथ माता या पिता का नाम संलग्न करते थे तथा समवेत रूप से उसका सम्बोधन भी होता था।

नामकरण के नियम

नामकरण करने के विविध नियमों का संकलन हमारे प्राचीन मनीषियों के द्वारा किया गया था। सभी गृह्यसूत्रों में यह प्रतिपादित किया गया है कि पुरुष का नाम दो, चार अक्षरों या समसंख्या वाला होना चाहिए। बैजवाप गृह्यसूत्र में 1, 2, 3, 4 या किसी अक्षर वाले नामों के विषय में वर्णन है। शांखायन ने छः अक्षरों तथा बौधायन ने छः या आठ अक्षरों वाले नामों के मत का प्रतिपादन किया है।[18] सभी गृह्यसूत्रों में यह वर्णित है कि नाम का प्रारम्भ उच्चारण करने योग्य तथा बीच में अर्धस्वर वाला होना चाहिए। कतिपय सूत्रग्रन्थों में ऐसा वर्णन है कि नाम के अन्त में विसर्ग तथा उसके पूर्व दीर्घ स्वर अवश्य होना चाहिए। आपस्तम्ब का कहना था कि नाम का दो भाग होना चाहिए जिसमें पहला भाग संज्ञा और दूसरा भाग क्रियात्मक हो जैसे ब्रह्मदत्त, देवदत्त आदि। कई गृह्यसूत्रों में ऐसा वर्णन है कि नाम कृत् प्रत्ययों से निर्मित होना चाहिए ना कि तद्धित प्रत्ययों से। आपस्तम्ब तथा हिरण्यकेशि में वर्णन है कि नाम से पूर्व 'सु' उपसर्ग होना चाहिए जैसे सुदर्शन, सुकेशा आदि। मानव गृह्यसूत्र ने देवता के नाम को वर्जित किया है। मिताक्षरा से पता चलता है कि नाम का सम्बन्ध कुलदेवता से होना चाहिए।[19]

वर्तमान में बालकों का नाम देवताओं तथा शूरवीरों के आधार पर रखा जाता है। फिल्मी सितारों के नाम के आधार पर भी नाम रखने का चलन जोरों पर है। कुछ धर्मसूत्रों तथा महाभाष्य में ऐसा वर्णित है कि बच्चे का नाम पिता के किसी पूर्वज का ही नाम होना चाहिए। प्राचीन काल में तो इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं लेकिन वर्तमान में इसका सर्वथा अभाव है। ऐसा भी वर्णन है कि पिता का नाम पुत्र के लिए कभी सम्बोधित नहीं होना चाहिए।[20] लड़कियों के नामकरण के लिए विशेष नियमों का प्रावधान था। कुछ गृह्यसूत्रों में लड़कियों के नाम में सम अक्षर की बात कही गयी है किन्तु मानव गृह्यसूत्र में लिखा है कि उनका नाम तीन अक्षरों से संयुक्त होना चाहिए।[21] पारस्कर गृह्यसूत्र में वर्णन है कि लड़कियों के नाम का अन्त 'आ' की मात्रा के साथ होना चाहिए। गोभिल एवं मानव धर्मसूत्र के मतानुसार नाम का अन्त 'दा' के साथ होना चाहिए। शंख तथा लिखित गृह्यसूत्र के अनुसार नाम के अन्त में 'ई' होना चाहिए। मनुस्मृति के अनुसार लड़कियों के नाम का अन्त दीर्घ स्वर से होना चाहिए।[22]

मनुस्मृति में वर्णित किया गया है कि सभी वर्णों का नाम शुभसूचक, शक्तिबोधक तथा शान्तिदायक होना चाहिए।[23] ब्राह्मणों एवं अन्य वर्णों के नाम के साथ एक उपपद होना चाहिए जिसमें शर्म (प्रसन्नता), रक्षा, पुष्टि एवं प्रेष्य का संकेत मिले।[24] मनु ने स्पष्ट रूप से नाम में शुभता को अंगीकृत किया है लेकिन वर्तमान में चिन्टू, पिन्टू, डब्बू, पप्पू इत्यादि नामों को देखकर कहीं से भी शुभता, शक्ति या शान्ति परिलक्षित नहीं

होती। नामकरण करने के पीछे हमारे मनीषियों का दृष्टिकोण था कि शुभ नामों के द्वारा बालक के अन्दर मौलिक कल्याणकारी प्रवृत्तियों, आकांक्षाओं तथा श्रेष्ठ आचरण का उद्भव कराया जा सके।

नामकरण का शास्त्रीय मुहूर्त्त

मनु ने शुभ तिथि, नक्षत्र तथा मुहूर्त्त देखकर नामकरण करने का निर्देश दिया है–

'पुण्ये तिथौ मुहूत्रे वा नक्षत्रे वा गुणान्विते'।[25]

वशिष्ठ का मानना है कि उत्तरा, रेवती, मूल, हस्त, पुष्य, शतभिषा, श्रवण, पुनर्वसु, अनुराधा, स्वाति, मृगशिरा, रोहिणी, धनिष्ठा में नामकरण संस्कार होना चाहिए।[26] धर्मसिन्धु के मतानुसार अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा आदि नक्षत्र नामकरण के लिए सर्वथा उचित हैं।[27] बृहस्पति ने तो धनिष्ठा, रेवती, हस्त, मूल, पुष्य, श्रवण, स्वाति तथा रोहिणी को नामकरण के लिए यश तथा लक्ष्मीदायक नक्षत्र माना है।[28]

धर्मसिन्धु के अनुसार चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा तथा अमावस्या के दिन कदापि नामकरण संस्कार नहीं करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शेष तिथियों को नामकरण शुभदायक होता है।[29] नृसिंह का मत है कि छिद्रा (चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी) पर्व (पूर्णिमा व अमावस्या) को त्यागकर अन्य किसी भी तिथि को नामकरण करें।[30]

धर्मसिन्धु के अनुसार सोम, बुध, गुरु तथा शुक्रवार नामकरण के लिए सर्वोत्तम दिन है।[31] निर्णय सिन्धु के अनुसार बुध, गुरु, शुक्रवार को बालक का नाम रखना चाहिए।

मलमास, गुरु–शुक्रास्त, सिंहस्थ गुरु, देवशयन तथा दक्षिणायन आदि का नामकरण में कोई दोष नहीं है।[32] बालक का नामकरण स्थिर लग्न (वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ) में किया जाना चाहिए। भद्रा होने पर नामकरण संस्कार को वर्जित किया गया है।

नामकरण का प्रभाव व महत्त्व

नामकरण के द्वारा शिशु को दीर्घायु व श्रेष्ठ जीवन हेतु आशीर्वाद प्रदान किया जाता था। इसके द्वारा बालक को कल्याणकारी, श्रेष्ठ एवं सदाचरण के मार्ग पर प्रेरित किया जाता था। सुन्दर तथा श्रेष्ठ अर्थ वाले नाम से बालक के अन्दर सकारात्मकता का संचार होता है। इसी के माध्यम से बालक को समाज में एक स्थान प्राप्त होता है। जब आप बालक को श्रेष्ठ नाम देंगे तो वह सदा अपने नाम की सार्थकता सिद्ध करने का प्रयास करेगा। बच्चे का नामकरण करने से पूर्व उस नाम का अर्थ अवश्य जानना चाहिए क्योंकि ऐसा न करने पर हम फैशन के वशीभूत होकर अनर्थक नाम रख देते हैं जो जीवन भर शिशु के लिए कष्टकारक होता है। नाम ऐसा होना चाहिए जो वाचन करने में अत्यन्त प्रिय एवं सरल हो ऐसा न होने पर शरारती लोग बालक का नाम बिगाड़ देते हैं। बालक का नाम सुन्दर अर्थों वाला होने पर नाम उसको स्वयं सुखद अनुभूति प्रदान करता है। नामकरण के द्वारा बच्चे को परिवार, समाज तथा मित्रों से जुड़े होने का एहसास होता है। नामकरण से बच्चे का आचरण, विचार और व्यवहार सकारात्मक रूप से बदलता है। हमारे मनीषियों ने नाम का प्रभाव इतने विस्तृत रूप से वर्णित किया है तो इसका जरूर वृहद् कारण रहा होगा। नाम व्यक्तित्त्व के विकास में सहायक होता है। नाम के द्वारा लोग बिना उपस्थित हुए ही अपना प्रभाव दिखा सकते हैं। लोक में कहा गया कि 'राम से बड़ा राम का नाम' अर्थात् नाम का प्रभाव व्यक्ति से भी ज्यादा होता है इसका सबसे सुन्दर वर्णन श्रीरामचरितमानस में देखने को मिलता है जहाँ केवल राम नाम लिखने से पत्थर भी तैरने लग जाते हैं। ज्योतिष में तो केवल नाम के ही आधार पर सम्पूर्ण भविष्य निर्धारित कर दिया जाता है। हमारे धर्माचार्यों ने बड़े चिन्तन के बाद संस्कार के रूप में नामकरण को शामिल किया होगा।

नामकरण संस्कार करने से तेज तथा आयु में वृद्धि होती है। समाज में किसी भी व्यक्ति का अस्तित्व उसके नाम से ही बनता है—

आयुर्वेदभिवृद्धिश्च सिद्धिर्व्यवहतेस्तथा।

नामकर्मफलं त्वेतत् समुधिष्टं मनीषिभिः।।

हमारे महर्षियों ने प्राचीन काल से ही भगवान तथा सन्तों के नाम की इतनी महिमा बताई है कि उसका वर्णन किया जाना सम्भव नहीं है। नाम के स्मरण मात्र से ही जीव का कल्याण हो जाता है उसे अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है अब इससे अधिक नामकरण के प्रभाव का और क्या वर्णन किया जाय। शास्त्रों में नामराशि तथा जन्मराशि का वर्णन है कि—

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे,

जन्मराशिप्रधानत्त्वं नामराशिं न चिन्तयेत।

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके,

नामराशि प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।।

विवाह, मांगलिक कार्य, यात्रा, ग्रहगोचर आदि में जन्म के समय दिए गए राशि नाम का महत्त्व है जबकि देश, ग्राम, युद्ध, सेवा और व्यवहारिक कार्यों में लौकिक नाम की प्रधानता होती है। व्यक्ति का जैसा नाम होगा वही उसी प्रकार का हो जायेगा इसलिए नामकरण के लिए उदात्त भावना का आश्रय लेना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. शाबरभाष्य—3 / 1 / 3
2. तन्त्रवार्तिक
3. याज्ञवल्क्य स्मृति—1 / 13
4. मनुस्मृति—2.16, 26, 29 / 3.1, 4
5. याज्ञवल्क्य स्मृति—1.2
6. गौतम स्मृति—8.2
7. वीर मित्रोदय संस्कार प्रकाश, पृ0 241
8. आश्वलायन गृह्यसूत्र—1.15, 4.10
9. शांखायन गृह्यसूत्र—1.24, 4.6
10. काठक गृह्यसूत्र—34—1.2
11. भारद्वाज गृह्यसूत्र—1.26
12. आपस्तम्ब गृह्यसूत्र—15 / 8—11
13. बौधायन गृह्यसूत्र—2 / 1 / 23—31
14. याज्ञवल्क्य स्मृति—1 / 12
15. बैखानस—3 / 19
16. मनुस्मृति—2 / 30
17. गोभिल—2 / 8 / 8
18. लघु आश्वलायन—6 / 1

19. कादम्बरी, पूर्वभाग अनुच्छेद–68
20. बौधायन गृह्यसूत्र–2/1/25
21. याज्ञवल्क्यस्मृति–1/12 (मिताक्षरा टीका)
22. मानव गृह्यसूत्र–1/18
23. मानव गृह्यसूत्र–1/18
24. मनुस्मृति–2/33
25. मनुस्मृति–2/31–33
26. मनुस्मृति–2/32
27. मनुस्मृति–2/30
28. निर्णयसिन्धु तृतीय परिच्छेद, पृ0 428
29. धर्मसिन्धु तृतीय परिच्छेद, पृ0 279
30. वीर मित्रोदय संस्कार प्रकाश
31. धर्मसिन्धु तृतीय परिच्छेद, पृ0 279
32. वीर मित्रोदय संस्कार प्रकाश
33. धर्मसिन्धु तृतीय परिच्छेद, पृ0 279
34. धर्मसिन्धु तृतीय परिच्छेद, पृ0 279